

भारतीय संविधान में अधिकार

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» अधिकारों का महत्व और घोषणा पत्र

प्रश्न 1 (आसान). अधिकारों का घोषणापत्र सरकार को क्या करने से रोकता है?

उत्तर – नागरिकों के अधिकारों के विरुद्ध काम करने से।

प्रश्न 2 (आसान). मौलिक अधिकार आम कानूनी अधिकारों से किस प्रकार भिन्न हैं?

उत्तर – मौलिक अधिकारों की गारंटी और सुरक्षा स्वयं संविधान करता है, जबकि सामान्य अधिकारों को संसद कानून बनाकर बदल सकती है।

प्रश्न 3 (मध्यम). हमारे स्वतंत्रता सेनानियों ने अधिकारों के महत्व को क्यों समझा था?

उत्तर – उन्होंने समझा कि अंग्रेजों के शासन में लोगों के अधिकारों का हनन होता था, इसलिए स्वतंत्र भारत में नागरिकों के अधिकारों की रक्षा ज़रूरी है।

प्रश्न 4 (कठिन). एक उदाहरण देकर समझाएं कि कैसे सरकार के विभिन्न अंग नागरिकों के अधिकारों का हनन कर सकते हैं और इसे कैसे रोका जा सकता है?

उत्तर – उदाहरण के लिए, पुलिस (जो कार्यपालिका का अंग है) किसी को बिना कारण गिरफ्तार कर सकती है, जो 'जीवन और दैहिक स्वतंत्रता के अधिकार' का हनन होगा। इसे 'अधिकारों का घोषणापत्र' रोकता है, क्योंकि न्यायालय ऐसी गिरफ्तारी को अवैध घोषित कर सकता है।

» भारतीय संविधान में मौलिक अधिकार

प्रश्न 5 (आसान). मौलिक अधिकार संविधान के किस भाग में वर्णित हैं?

उत्तर – भाग III

प्रश्न 6 (आसान). क्या सरकार मौलिक अधिकारों का उल्लंघन कर सकती है?

उत्तर – नहीं

प्रश्न 7 (मध्यम). मौलिक अधिकारों को कौन संरक्षित करता है?

उत्तर – न्यायपालिका

प्रश्न 8 (कठिन). एक साधारण कानूनी अधिकार और एक मौलिक अधिकार में मुख्य अंतर क्या है?

उत्तर – साधारण कानूनी अधिकार संसद द्वारा कानून बनाकर बदले जा सकते हैं, जबकि मौलिक अधिकारों में परिवर्तन के लिए संविधान में संशोधन करना पड़ता है।

» समता का अधिकार

प्रश्न 9 (आसान). कानून की नजर में सब समान हैं, यह कौन से अधिकार में आता है?

उत्तर – समता का अधिकार

प्रश्न 10 (आसान). 'छूआछूत का अंत' किस मौलिक अधिकार का हिस्सा है?

उत्तर – समता का अधिकार

प्रश्न 11 (मध्यम). अगर एक होटल मालिक किसी को उसकी जाति के कारण अपने होटल में रुकने से मना कर दे, तो वह किस अधिकार का उल्लंघन कर रहा है?

उत्तर – समता का अधिकार (सार्वजनिक स्थलों पर प्रवेश की समानता और भेदभाव निषेध)

प्रश्न 12 (कठिन). सरकार ने महिलाओं के लिए सरकारी नौकरियों में कुछ सीटें आरक्षित की हैं। क्या यह 'समता के अधिकार' का उल्लंघन है? समझाओ।

उत्तर – नहीं, यह समता के अधिकार का उल्लंघन नहीं है। बल्कि, यह 'अवसर की समानता' (Equality of Opportunity) को बढ़ावा देने के लिए एक विशेष प्रावधान है। संविधान सरकार को बच्चों, महिलाओं और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों की बेहतरी के लिए ऐसे खास नियम बनाने की अनुमति देता है, ताकि समाज में व्याप्त असमानताओं को दूर किया जा सके और सभी को आगे बढ़ने के समान अवसर मिल सकें।

» स्वतंत्रता का अधिकार: जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता

प्रश्न 13 (आसान). संविधान के किस अनुच्छेद में 'जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार' आता है?

उत्तर – अनुच्छेद 21

प्रश्न 14 (आसान). अगर पुलिस किसी को गिरफ्तार करती है, तो उसे कितने समय के अंदर जज के सामने पेश करना होता है?

उत्तर – 24 घंटे

प्रश्न 15 (मध्यम). क्या 'जीवन का अधिकार' केवल शारीरिक रूप से जीवित रहने तक ही सीमित है? समझाओ।

उत्तर – नहीं, सर्वोच्च न्यायालय ने इसके दायरे को बढ़ा दिया है। इसमें मानवीय गरिमा के साथ जीने का अधिकार, आश्रय का अधिकार और आजीविका का अधिकार भी शामिल हैं।

प्रश्न 16 (कठिन). यदि किसी व्यक्ति को बिना किसी अपराध के, केवल संदेह के आधार पर गिरफ्तार किया जाए तो क्या यह 'जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार' का उल्लंघन होगा? अपने उत्तर का समर्थन करें।

उत्तर – हाँ, यह उल्लंघन होगा। भारतीय संविधान के अनुसार, किसी को भी बिना कारण बताए या बिना उचित कानूनी प्रक्रिया के उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता से वंचित नहीं किया जा सकता। निवारक निरोध (preventive detention) जैसे अपवाद होते हैं, लेकिन उसके लिए भी कानूनी प्रक्रिया और समय सीमाएं तय हैं। सामान्य गिरफ्तारी में कारण बताना और 24 घंटे में मजिस्ट्रेट के सामने पेश करना अनिवार्य है।

» निवारक नजरबंदी और अन्य स्वतंत्रताएँ

प्रश्न 17 (आसान). निवारक नजरबंदी का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर – संभावित खतरों को रोकना और देश की शांति व सुरक्षा बनाए रखना।

प्रश्न 18 (आसान). निवारक नजरबंदी में किसी व्यक्ति को अधिकतम कितने समय के लिए हिरासत में लिया जा सकता है?

उत्तर – अधिकतम 3 महीने के लिए।

प्रश्न 19 (मध्यम). तीन महीने की अवधि के बाद निवारक नजरबंदी के मामलों में क्या प्रक्रिया अपनाई जाती है?

उत्तर – तीन महीने बाद मामले को समीक्षा के लिए एक सलाहकार बोर्ड के सामने लाया जाता है।

प्रश्न 20 (कठिन). क्यों निवारक नजरबंदी को व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार के साथ विरोधाभासी माना जाता है, और संविधान इसे क्यों स्वीकार करता है?

उत्तर – निवारक नजरबंदी बिना किसी आरोप या मुकदमे के व्यक्ति को स्वतंत्रता से वंचित करती है, जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता के विपरीत है। लेकिन संविधान इसे 'लोक व्यवस्था, शांति और सुरक्षा' जैसे बड़े राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए एक अपवाद के रूप में स्वीकार करता है, ताकि संभावित खतरों को समय रहते रोका जा सके।

» आरोपी या अभियुक्त के अधिकार

प्रश्न 21 (आसान). क्या एक व्यक्ति को एक ही अपराध के लिए दो बार जेल भेजा जा सकता है?

उत्तर – नहीं

प्रश्न 22 (आसान). क्या पुलिस किसी को जबरदस्ती यह कह सकती है कि 'मान लो तुमने ही यह गलती की है'?

उत्तर – नहीं

प्रश्न 23 (मध्यम). अगर किसी कार्य को आज अपराध घोषित किया गया है, तो क्या कल किए गए उसी कार्य के लिए सज़ा मिल सकती है?

उत्तर – नहीं, क्योंकि कानून पिछली तारीख से लागू नहीं होता।

प्रश्न 24 (कठिन). एक आरोप जिस पर पहले से ही कोर्ट में सुनवाई चल रही है, उसके लिए सरकार ने एक नया कानून पारित कर दिया है जो ज़्यादा सज़ा का प्रावधान करता है। क्या उस व्यक्ति को नए कानून के तहत सज़ा मिलेगी?

उत्तर – नहीं, क्योंकि यह अधिकार 'दोहरी सज़ा से सुरक्षा' और 'पिछली तारीख से कानून लागू न होने' को सुनिश्चित करता है। जिस समय अपराध हुआ था, उस समय के कानून के अनुसार ही सज़ा मिलेगी।

» शोषण के विरुद्ध अधिकार

प्रश्न 25 (आसान). क्या किसी बच्चे से उसकी इच्छा के विरुद्ध काम करवाना 'शोषण के विरुद्ध अधिकार' का उल्लंघन है?

उत्तर – हाँ

प्रश्न 26 (आसान). अनुच्छेद 24 किस पर रोक लगाता है?

उत्तर – बच्चों से खतरनाक रोजगार पर

प्रश्न 27 (मध्यम). किसी को जबरदस्ती खरीदने या बेचने की प्रथा को क्या कहते हैं?

उत्तर – मानव दुर्व्यापार

प्रश्न 28 (कठिन). भारत में 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को किन कार्यों में नियुक्त करने पर प्रतिबंध है?

उत्तर – जोखिम वाले कार्य और कारखाने जैसे खतरनाक रोजगार

» धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार

प्रश्न 29 (आसान). धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार हमें किस बात की आजादी देता है?

उत्तर – यह हमें अपने पसंद के धर्म को चुनने, उसका पालन करने, और उसका प्रचार करने की आजादी देता है।

प्रश्न 30 (आसान). क्या भारत का कोई राजकीय धर्म है?

उत्तर – नहीं, भारत का कोई राजकीय धर्म नहीं है।

प्रश्न 31 (मध्यम). धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार पर सरकार किन आधारों पर प्रतिबंध लगा सकती है?

उत्तर – सरकार लोक व्यवस्था, नैतिकता और स्वास्थ्य के आधार पर धार्मिक स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा सकती है।

प्रश्न 32 (कठिन). क्या धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार में जबरन धर्म परिवर्तन शामिल है? समझाएं।

उत्तर – नहीं, धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार में जबरन धर्म परिवर्तन शामिल नहीं है। संविधान व्यक्ति को अपने धर्म का प्रचार करने की स्वतंत्रता देता है ताकि लोग स्वेच्छा से आकर्षित हो सकें, लेकिन किसी को भय या लालच देकर धर्म बदलने पर मजबूर करना गैरकानूनी है।

» सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार

प्रश्न 33 (आसान). कौन-से अधिकार के तहत अल्पसंख्यक अपनी भाषा और संस्कृति बचा सकते हैं?

उत्तर – सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार

प्रश्न 34 (आसान). क्या अल्पसंख्यक समुदाय अपने स्कूल खोल सकते हैं?

उत्तर – हाँ

प्रश्न 35 (मध्यम). सरकार अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थानों को वित्तीय मदद देने में भेदभाव क्यों नहीं कर सकती?

उत्तर – क्योंकि सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार संविधान का हिस्सा है और यह सरकार को भेदभाव करने से रोकता है।

प्रश्न 36 (कठिन). अगर कोई समुदाय संख्या में कम है और उसकी अपनी विशेष परंपराएँ हैं, तो क्या उसे अल्पसंख्यक माना जाएगा, भले ही उसका धर्म बहुसंख्यक हो?

उत्तर – हाँ, अल्पसंख्यक सिर्फ धर्म के आधार पर ही नहीं, बल्कि भाषा और संस्कृति के आधार पर भी तय किए जा सकते हैं।

» संवैधानिक उपचारों का अधिकार

प्रश्न 37 (आसान). संवैधानिक उपचारों का अधिकार कौन से अनुच्छेद में है?

उत्तर – अनुच्छेद 32

प्रश्न 38 (आसान). डॉ. अंबेडकर ने इस अधिकार को क्या कहा है?

उत्तर – संविधान का हृदय और आत्मा

प्रश्न 39 (मध्यम). अगर किसी व्यक्ति के मौलिक अधिकार का उल्लंघन होता है, तो वह किन दो अदालतों में सीधा जा सकता है?

उत्तर – उच्च न्यायालय (High Court) और सर्वोच्च न्यायालय (Supreme Court)

प्रश्न 40 (कठिन). अगर किसी को अवैध रूप से हिरासत में लिया जाता है, तो अदालत कौन सी रिट जारी कर सकती है और उसका क्या मतलब है?

उत्तर – अदालत 'बंदी प्रत्यक्षीकरण' (Habeas Corpus) रिट जारी कर सकती है, जिसका मतलब है कि हिरासत में लिए गए व्यक्ति को 24 घंटे के भीतर अदालत के सामने पेश करना होगा।

» राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग और अन्य सुरक्षा संरचनाएँ

प्रश्न 41 (आसान). राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग का गठन किस वर्ष हुआ था?

उत्तर – 1993

प्रश्न 42 (आसान). राष्ट्रीय महिला आयोग किस वर्ग के अधिकारों की रक्षा करता है?

उत्तर – महिलाओं

प्रश्न 43 (मध्यम). क्या राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग सीधे किसी को सज़ा सुना सकता है? कारण बताओ।

उत्तर – नहीं, आयोग को स्वयं मुकदमा सुनने का अधिकार नहीं है। यह सरकार या न्यायालय को केवल सिफारिश कर सकता है।

प्रश्न 44 (कठिन). राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग किन दो ऐतिहासिक मामलों में अपने प्रभावी हस्तक्षेप के लिए जाना जाता है?

उत्तर – पंजाब में युवकों के गायब होने और गुजरात दंगों के मामले में।

» राज्य के नीति-निर्देशक तत्व

प्रश्न 45 (आसान). राज्य के नीति-निर्देशक तत्व संविधान के किस भाग में हैं?

उत्तर – भाग IV (चार)

प्रश्न 46 (आसान). क्या नीति-निर्देशक तत्वों का उल्लंघन होने पर कोई नागरिक न्यायालय जा सकता है?

उत्तर – नहीं

प्रश्न 47 (मध्यम). राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों के दो प्रमुख उद्देश्य बताएं।

उत्तर – लोगों का कल्याण और सामाजिक-आर्थिक न्याय स्थापित करना।

प्रश्न 48 (कठिन). एक उदाहरण दें जहाँ सरकार ने नीति-निर्देशक तत्व को लागू करने के लिए कानून बनाया हो।

उत्तर – शिक्षा का अधिकार अधिनियम (राइट टू एजुकेशन एक्ट), बैंकों का राष्ट्रीयकरण, न्यूनतम मजदूरी कानून।

» मौलिक कर्तव्य

प्रश्न 49 (आसान). मौलिक कर्तव्य संविधान के किस संशोधन द्वारा जोड़े गए?

उत्तर – 42वें संविधान संशोधन द्वारा।

प्रश्न 50 (आसान). कोई एक मौलिक कर्तव्य बताइए जो पर्यावरण से संबंधित है।

उत्तर – पर्यावरण की रक्षा करना और उसका संवर्धन करना।

प्रश्न 51 (मध्यम). क्या मौलिक कर्तव्यों को लागू न करने पर आप न्यायालय जा सकते हैं? समझाइए।

उत्तर – नहीं, मौलिक कर्तव्यों को लागू न करने पर आप सीधे न्यायालय नहीं जा सकते क्योंकि ये 'वाद योग्य' नहीं हैं। ये नागरिकों के लिए नैतिक दायित्व हैं।

प्रश्न 52 (कठिन). मौलिक अधिकार और मौलिक कर्तव्यों में मुख्य अंतर क्या है?

उत्तर – मौलिक अधिकार नागरिकों को राज्य के विरुद्ध प्राप्त अधिकार हैं, जिन्हें लागू न करने पर न्यायालय जाया जा सकता है। मौलिक कर्तव्य नागरिकों की देश और समाज के प्रति जिम्मेदारियाँ हैं, जो 'वाद योग्य' नहीं हैं और नैतिक प्रेरणा के रूप में कार्य करते हैं।

» मौलिक अधिकार और नीति-निर्देशक तत्वों में संबंध

प्रश्न 53 (आसान). मौलिक अधिकार सरकार के कार्यों पर क्या लगाते हैं?

उत्तर – प्रतिबंध

प्रश्न 54 (आसान). नीति-निर्देशक तत्व सरकार को क्या करने की प्रेरणा देते हैं?

उत्तर – लोक कल्याण के कार्य

प्रश्न 55 (मध्यम). वह कौन सा प्रमुख मौलिक अधिकार था जिसके कारण मौलिक अधिकारों और नीति-निर्देशक तत्वों के बीच विवाद उत्पन्न हुआ?

उत्तर – संपत्ति का अधिकार

प्रश्न 56 (कठिन). केशवानंद भारती मामले का 'मौलिक अधिकार और नीति-निर्देशक तत्वों में संबंध' पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर – इसने 'संविधान के मूल ढाँचे' का सिद्धांत दिया, जिससे संसद की संविधान संशोधन की शक्ति सीमित हो गई और मौलिक अधिकारों को एक सीमा तक सुरक्षित रखा गया।

» संपत्ति का अधिकार: मौलिक से कानूनी अधिकार

प्रश्न 57 (आसान). संपत्ति का अधिकार पहले कौन सा अधिकार था?

उत्तर – मौलिक अधिकार

प्रश्न 58 (आसान). संपत्ति के अधिकार को कब मौलिक अधिकारों से हटाया गया?

उत्तर – 1978 में

प्रश्न 59 (मध्यम). किस संविधान संशोधन द्वारा संपत्ति के अधिकार को मौलिक अधिकारों से हटाया गया?

उत्तर – 44वें संविधान संशोधन द्वारा

प्रश्न 60 (कठिन). संपत्ति के अधिकार को मौलिक से कानूनी अधिकार बनाने का मुख्य कारण क्या था?

उत्तर – सामाजिक और आर्थिक सुधारों (जैसे भूमि सुधार) को लागू करने में सरकार की सुविधा के लिए, क्योंकि मौलिक अधिकार के रूप में यह बाधा डालता था।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. यदि सरकार नागरिकों से उनके बोलने की आज़ादी छीन ले, तो इसका नागरिकों पर क्या प्रभाव पड़ेगा और इसे रोकने में 'अधिकारों का घोषणापत्र' कैसे मदद करता है?

› पहला, अगर बोलने की आज़ादी छीन जाए, तो लोग अपने विचार व्यक्त नहीं कर पाएंगे, जिससे लोकतंत्र कमजोर होगा और वे अन्याय के खिलाफ आवाज़ नहीं उठा पाएंगे।

› दूसरा, 'अधिकारों का घोषणापत्र' (जैसे भारत में मौलिक अधिकार) सरकार को ऐसी मनमानी करने से रोकता है। इसमें 'Freedom of Speech and Expression' यानी 'भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' एक मौलिक अधिकार है।

› तीसरा, अगर सरकार फिर भी ऐसा करने की कोशिश करती है, तो नागरिक न्यायालय (कोर्ट) में जाकर अपने अधिकारों की रक्षा की मांग कर सकते हैं, क्योंकि 'The judiciary protects the fundamental rights' – न्यायपालिका मौलिक अधिकारों की संरक्षक है।

उत्तर – बोलने की आज़ादी छीनने से लोकतंत्र कमजोर होगा, लेकिन 'अधिकारों का घोषणापत्र' सरकार को ऐसा करने से रोकता है और नागरिक न्यायालय में जाकर अपने अधिकार वापस पा सकते हैं।

उदाहरण 2. सोचो, एक गाँव में कुछ मज़दूरों को सरकार द्वारा तय न्यूनतम मजदूरी से भी कम पैसे दिए जा रहे हैं, और उनसे बहुत खराब परिस्थितियों में काम लिया जा रहा है। क्या यह उनके मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है? और अगर हाँ, तो कौन से अधिकार का?

› पहला कदम: हमें यह देखना होगा कि मज़दूरों को 'dismal conditions of work' – यानी बहुत बुरी स्थितियों में काम करने के लिए मजबूर किया जा रहा है और 'paid less than the minimum wage' – तय न्यूनतम मजदूरी से भी कम पैसे दिए जा रहे हैं।

› दूसरा कदम: अब याद करो हमारे मौलिक अधिकारों को। 'The right against exploitation' – शोषण के विरुद्ध अधिकार, कहता है कि किसी से जबरन या कम मजदूरी पर काम नहीं कराया जा सकता।

› तीसरा कदम: हाँ, बिल्कुल! यह उनके 'शोषण के विरुद्ध मौलिक अधिकार' का सीधा-सीधा उल्लंघन है, क्योंकि उनसे बेगार या बंधुआ मजदूरी जैसी स्थिति में काम लिया जा रहा है।

उत्तर – हाँ, यह उनके 'शोषण के विरुद्ध मौलिक अधिकार' (Right against Exploitation) का उल्लंघन है।

उदाहरण 3. एक गाँव में पंचायत ने फैसला किया कि सार्वजनिक कुएं से केवल एक खास जाति के लोग ही पानी भरेंगे। क्या यह समता के अधिकार का उल्लंघन है? अगर हाँ, तो कैसे?

› पहला कदम: हमें देखना होगा कि 'समता के अधिकार' में क्या-क्या आता है। इसमें सार्वजनिक स्थानों पर 'समानता के आधार पर प्रवेश' की बात कही गई है। कुआँ एक सार्वजनिक स्थान है।

› दूसरा कदम: यह फैसला 'धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, जन्म-स्थान या इनमें से किसी के आधार पर' भेदभाव कर रहा है। यहाँ जाति के आधार पर भेदभाव हो रहा है।

› तीसरा कदम: संविधान का 'समता का अधिकार', विशेष रूप से 'सार्वजनिक स्थलों पर प्रवेश की समानता' और 'भेदभाव का निषेध' (अनुच्छेद 15) इसे गैर-कानूनी बनाता है। 'Untouchability has been abolished'.

› निष्कर्ष: हाँ, यह समता के अधिकार का उल्लंघन है, क्योंकि सार्वजनिक कुएं पर पानी भरने से जाति के आधार पर किसी को रोकना संविधान के खिलाफ है।

उत्तर – हाँ, यह समता के अधिकार का उल्लंघन है क्योंकि सार्वजनिक कुएं से पानी भरने से जाति के आधार पर रोकना संविधान के 'भेदभाव निषेध' और 'सार्वजनिक स्थानों पर प्रवेश की समानता' के नियमों के खिलाफ है।

उदाहरण 4. एक व्यक्ति 'क' को पुलिस ने बिना कोई कारण बताए गिरफ्तार कर लिया और तीन दिन तक हिरासत में रखा। क्या यह भारतीय संविधान में दिए गए स्वतंत्रता के अधिकार का उल्लंघन है? समझाएँ।

› पहला कदम: हमें यह देखना होगा कि गिरफ्तारी के क्या नियम हैं। हमारा संविधान कहता है कि किसी भी व्यक्ति को 'बिना कारण बताए गिरफ्तार नहीं किया जा सकता'।

› दूसरा कदम: यह भी नियम है कि गिरफ्तार व्यक्ति को '24 घंटे के अंदर निकटतम न्यायाधीश के सामने पेश करना आवश्यक है'।

› तीसरा कदम: प्रश्न में दी गई स्थिति के अनुसार, व्यक्ति 'क' को 'बिना कारण बताए' गिरफ्तार किया गया और 'तीन दिन तक हिरासत में रखा गया', जो 24 घंटे की समय सीमा से अधिक है।

› निष्कर्ष: अतः, यह 'जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार' (अनुच्छेद 21) का स्पष्ट उल्लंघन है।

उत्तर – हाँ, यह भारतीय संविधान में दिए गए 'स्वतंत्रता के अधिकार: जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता' का स्पष्ट उल्लंघन है, क्योंकि गिरफ्तारी का कारण नहीं बताया गया और उसे 24 घंटे से अधिक समय तक बिना मजिस्ट्रेट के सामने पेश किए हिरासत में रखा गया।

उदाहरण 5. सरकार ने एक व्यक्ति को निवारक नजरबंदी कानून के तहत 4 महीने के लिए हिरासत में ले लिया है। क्या यह संवैधानिक रूप से सही है? कारण बताओ।

› पहला कदम: हमें यह याद करना होगा कि निवारक नजरबंदी की अधिकतम अवधि कितनी है।

› दूसरा कदम: संविधान के अनुसार, निवारक नजरबंदी की अधिकतम अवधि 'अधिकतम 3 महीने' होती है।

› तीसरा कदम: 3 महीने के बाद, मामले को समीक्षा के लिए एक सलाहकार बोर्ड के सामने लाना अनिवार्य है।

› चौथा कदम: इस मामले में व्यक्ति को 4 महीने के लिए हिरासत में लिया गया है, जो 3 महीने की संवैधानिक सीमा से अधिक है।

उत्तर – नहीं, यह संवैधानिक रूप से सही नहीं है। निवारक नजरबंदी अधिकतम 3 महीने के लिए ही हो सकती है। 4 महीने के लिए हिरासत में लेना इस कानून का उल्लंघन है।

उदाहरण 6. मोहन पर 10 साल पहले एक अपराध का आरोप लगा था, जिसके लिए उसे सजा हो चुकी थी। अब 10 साल बाद, उसी अपराध के लिए एक नया, सख्त कानून बना है। क्या मोहन को नए कानून के तहत दोबारा सजा दी जा सकती है?

› पहला अधिकार कहता है कि 'No person shall be punished more than once for the same offence'. यानी, एक ही अपराध के लिए एक से ज्यादा सजा नहीं मिल सकती।

› दूसरा अधिकार कहता है कि 'No law shall declare any act to be an offence retrospectively'. मतलब, कोई भी कानून पिछली तारीख से लागू नहीं हो सकता।

› मोहन को पहले ही उस अपराध के लिए सजा मिल चुकी है, और नया कानून पिछली तारीख से लागू नहीं होगा।

› इसलिए, नए कानून के तहत मोहन को उसी अपराध के लिए दोबारा सजा नहीं दी जा सकती।

उत्तर – नहीं, मोहन को नए कानून के तहत उसी अपराध के लिए दोबारा सजा नहीं दी जा सकती, क्योंकि भारतीय संविधान 'दोहरी सजा से सुरक्षा' और 'पिछली तारीख से कानून लागू न होने' का अधिकार देता है।

उदाहरण 7. श्याम नाम का एक व्यक्ति एक साहूकार से ₹5000 उधार लेता है। साहूकार उससे कहता है कि जब तक वह पैसे नहीं चुकाएगा, उसे साहूकार के घर में बिना वेतन के काम करना होगा। क्या यह 'शोषण के विरुद्ध अधिकार' का उल्लंघन है?

› पहचानें कि क्या यह बंधुआ मजदूरी है: साहूकार द्वारा श्याम से बिना वेतन के काम करवाना, जब तक कि वह कर्ज न चुकाए, बंधुआ मजदूरी की श्रेणी में आता है।

› पहचानें कि क्या यह 'शोषण के विरुद्ध अधिकार' के अंतर्गत आता है: भारतीय संविधान का अनुच्छेद 23 बंधुआ मजदूरी और बेगार पर रोक लगाता है।

› निष्कर्ष निकालें: हाँ, यह 'शोषण के विरुद्ध अधिकार' का सीधा उल्लंघन है। श्याम को कानूनी सहायता मिल सकती है।

उत्तर – हाँ, यह 'शोषण के विरुद्ध अधिकार' का उल्लंघन है।

उदाहरण 8. रमेश एक ईसाई है और वह चाहता है कि उसके बेटे को सरकारी स्कूल में ईसाई धर्म की शिक्षा दी जाए। क्या यह संभव है? कारण सहित समझाएं।

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि 'धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार' क्या कहता है। यह व्यक्ति को अपना धर्म चुनने, मानने और उसका प्रचार करने की स्वतंत्रता देता है।

› दूसरा कदम: यह भी महत्वपूर्ण है कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है। इसका मतलब है 'भारत का कोई राजकीय धर्म नहीं है'।

› तीसरा कदम: संविधान यह भी कहता है कि 'राज्य द्वारा संचालित शैक्षणिक संस्थाओं में न तो किसी धर्म का प्रचार किया जाएगा, न ही कोई धार्मिक शिक्षा दी जाएगी'।

› चौथा कदम: इन प्रावधानों को ध्यान में रखते हुए, सरकारी स्कूलों में किसी विशेष धर्म की शिक्षा देना संभव नहीं है, ताकि सभी धर्मों के प्रति समानता बनी रहे।

उत्तर – नहीं, रमेश के बेटे को सरकारी स्कूल में ईसाई धर्म की शिक्षा देना संभव नहीं है। भारतीय संविधान के अनुसार, सरकारी शैक्षणिक संस्थानों में किसी विशेष धर्म का प्रचार या धार्मिक शिक्षा नहीं दी जा सकती, क्योंकि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है और सभी धर्मों के प्रति समान व्यवहार करता है।

उदाहरण 9. अगर कुछ सिंधी लोग अपनी भाषा और संस्कृति को बचाने के लिए एक स्कूल खोलना चाहते हैं, तो क्या भारतीय संविधान उन्हें यह अधिकार देता है? और क्या सरकार उन्हें वित्तीय सहायता देने में भेदभाव कर सकती है?

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि सिंधी समुदाय भारत में एक भाषाई अल्पसंख्यक (linguistic minority) है।

› दूसरा कदम: भारतीय संविधान का 'सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार' (अनुच्छेद 29 और 30) अल्पसंख्यकों को अपनी भाषा, लिपि और संस्कृति को संरक्षित रखने का अधिकार देता है।

› तीसरा कदम: इसी अधिकार के तहत, वे अपनी शैक्षिक संस्थाएँ (educational institutions) स्थापित कर सकते हैं।

› चौथा कदम: संविधान यह भी सुनिश्चित करता है कि सरकार इन संस्थाओं को वित्तीय अनुदान (financial aid) देने में किसी तरह का भेदभाव नहीं करेगी।

उत्तर – हाँ, भारतीय संविधान सिंधी समुदाय को अपनी भाषा और संस्कृति को बचाने के लिए स्कूल खोलने का पूरा अधिकार देता है। और नहीं, सरकार उन्हें वित्तीय सहायता देने में किसी भी तरह का भेदभाव नहीं कर सकती।

उदाहरण 10. एक गांव में सरकार ने अचानक आदेश दिया कि गांव के सभी बच्चे केवल एक ही सरकारी स्कूल में पढ़ेंगे, और उनके माता-पिता को निजी स्कूल में पढ़ाने का कोई अधिकार नहीं होगा, चाहे वे फीस दे सकते हों। क्या यह किसी मौलिक अधिकार का उल्लंघन है? और अगर हां, तो ग्रामीण अपने अधिकारों की रक्षा के लिए क्या कर सकते हैं?

› पहला कदम: हमें यह पहचानना होगा कि यह आदेश बच्चों के 'शिक्षा के अधिकार' और माता-पिता के अपने बच्चों को 'अपनी पसंद के संस्थान में शिक्षा दिलाने' के अधिकार का उल्लंघन है, जो 'स्वतंत्रता के अधिकार' के तहत आता है।

› दूसरा कदम: चूँकि यह एक मौलिक अधिकार का उल्लंघन है, ग्रामीण 'संवैधानिक उपचारों के अधिकार' का उपयोग कर सकते हैं।

› तीसरा कदम: ग्रामीण या तो सीधे उच्च न्यायालय (High Court) या सर्वोच्च न्यायालय (Supreme Court) में याचिका (petition) दायर कर सकते हैं।

› चौथा कदम: अदालत इस मामले की सुनवाई करेगी और अगर पाती है कि मौलिक अधिकारों का उल्लंघन हुआ है, तो वह सरकार को अपना आदेश वापस लेने या उसमें बदलाव करने के लिए उचित 'रिट' (जैसे परमादेश) जारी कर सकती है।

उत्तर – हाँ, यह मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है। ग्रामीण 'संवैधानिक उपचारों के अधिकार' के तहत सीधे उच्च न्यायालय या सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर करके न्याय प्राप्त कर सकते हैं।

उदाहरण 11. मानवाधिकार आयोग का क्या महत्व है और इसके कुछ प्रमुख कार्य बताइये।

› पहला, इसका महत्व यह है कि यह मौलिक अधिकारों को 'व्यवहार में लागू करने और उनकी रक्षा करने' में सहायक होता है।

› दूसरा, इसके मुख्य कार्यों में 'मानवाधिकारों के उल्लंघन की शिकायतें मिलने पर स्वयं अपनी पहल पर या किसी पीड़ित व्यक्ति की याचिका पर जांच' करना शामिल है।

› तीसरा, 'जेलों में बंदियों की स्थिति का अध्ययन करने' भी यह जा सकता है, ताकि उनके अधिकारों का हनन न हो।

› चौथा, यह 'मानवाधिकारों के क्षेत्र में शोध कर सकता है या शोध को प्रोत्साहित कर सकता है', जिससे जागरूकता बढ़े।

› आखिरी, यह सरकार या न्यायालय को अपनी जांच के आधार पर 'मुकदमें चलाने की सिफारिश' करता है, न्याय दिलाने के लिए।

उत्तर – मानवाधिकार आयोग मौलिक अधिकारों की रक्षा और उनके उल्लंघन की जांच करके न्याय दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके प्रमुख कार्यों में शिकायतें सुनना, जांच करना, जेलों की स्थिति का अध्ययन करना, शोध को बढ़ावा देना और सरकार/न्यायालय को सिफारिशें देना शामिल है।

उदाहरण 12. भारतीय संविधान में 'राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों' का क्या महत्व है और इन्हें 'वाद योग्य' क्यों नहीं कहा जाता?

› पहले समझेंगे महत्व: ये सरकार को 'कल्याणकारी राज्य' बनाने की दिशा दिखाते हैं। ये सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय सुनिश्चित करने, जीवन स्तर उठाने और संसाधनों के समान वितरण जैसे लक्ष्य तय करते हैं।

› फिर समझेंगे 'वाद योग्य नहीं' का अर्थ: इसका मतलब है कि यदि सरकार इन तत्वों को लागू करने में विफल रहती है, तो कोई भी नागरिक अदालत में जाकर सरकार को उन्हें लागू करने का आदेश देने की मांग नहीं कर सकता।

› इसका कारण: संविधान निर्माताओं का मानना था कि इन तत्वों के पीछे 'नैतिक शक्ति' है और जनता का दबाव ही सरकार को इन्हें लागू करने के लिए प्रेरित करेगा, न कि अदालत की कार्रवाई। साथ ही, जब संविधान बना था, तब देश के पास इतने संसाधन नहीं थे कि हर नीति-निर्देशक तत्व को तुरंत कानून बनाकर लागू किया जा सके।

उत्तर – नीति-निर्देशक तत्व सरकार के लिए एक नैतिक दिशा-निर्देश और प्रेरणा स्रोत हैं ताकि वे एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना कर सकें। इन्हें 'वाद योग्य' इसलिए नहीं कहा जाता क्योंकि अदालतें सरकार को इन्हें लागू करने का आदेश नहीं दे सकतीं; इनका अनुपालन सरकार की इच्छाशक्ति और नैतिक जिम्मेदारी पर निर्भर करता है।

उदाहरण 13. संविधान के 'मौलिक कर्तव्यों' में से कोई दो कर्तव्य बताइए जो एक भारतीय नागरिक को निभाने चाहिए।

› पहला कर्तव्य है कि हमें 'संविधान का पालन करना चाहिए' और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करना चाहिए।

› दूसरा कर्तव्य है कि हमें 'भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करनी चाहिए' और उसे अक्षुण्ण रखना चाहिए।

उत्तर – संविधान का पालन करना और भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करना।

उदाहरण 14. संविधान के संदर्भ में, 'संपत्ति का अधिकार' मौलिक अधिकार से कानूनी अधिकार कब और क्यों बना?

› स्टेप 1: पहले समझो, 'संपत्ति का अधिकार' मूल संविधान में मौलिक अधिकार था।

› स्टेप 2: सरकार ने नीति-निर्देशक तत्वों को लागू करने के लिए कई कानून बनाए, जैसे जमींदारी उन्मूलन, जिससे यह मौलिक अधिकार बाधित होने लगा।

› स्टेप 3: इस पर न्यायपालिका और कार्यपालिका के बीच लंबा विवाद चला, क्योंकि सरकार सामाजिक कल्याण को प्राथमिकता देना चाहती थी और न्यायालय मौलिक अधिकारों को।

› स्टेप 4: अंत में, 1973 के केशवानंद भारती मामले के बाद, 1978 में 44वें संविधान संशोधन द्वारा संपत्ति के अधिकार को मौलिक अधिकारों की सूची से हटाकर अनुच्छेद 300(क) के तहत एक सामान्य कानूनी अधिकार बना दिया गया।

› स्टेप 5: यह इसलिए किया गया ताकि सरकार सामाजिक और आर्थिक न्याय के लिए नीतियां बनाने में अधिक स्वतंत्र हो सके और मौलिक अधिकार इसमें बाधा न बनें।

उत्तर – संपत्ति का अधिकार 1978 में 44वें संविधान संशोधन द्वारा मौलिक अधिकार से हटाकर अनुच्छेद 300(क) के तहत एक सामान्य कानूनी अधिकार बना दिया गया, ताकि सरकार नीति-निर्देशक तत्वों को लागू करते हुए सामाजिक कल्याण के लक्ष्य को प्राप्त कर सके।

उदाहरण 15. भारतीय संविधान में संपत्ति के अधिकार की स्थिति में क्या बदलाव आया है और यह बदलाव क्यों किया गया?

› पहला बदलाव: 'संपत्ति का अधिकार' मूल रूप से 'अनुच्छेद 19(1)(f)' (स्वतंत्रता के अधिकार का हिस्सा) और 'अनुच्छेद 31' (सीधा मौलिक अधिकार) के तहत एक मौलिक अधिकार था।

› दूसरा बदलाव: '44वें संविधान संशोधन, 1978' के द्वारा, इसे मौलिक अधिकारों की सूची से हटा दिया गया।

› वर्तमान स्थिति: अब 'संपत्ति का अधिकार' 'संविधान के अनुच्छेद 300A' के तहत एक 'सामान्य कानूनी अधिकार' बन गया है।

› बदलाव का कारण: यह बदलाव इसलिए किया गया ताकि 'सामाजिक न्याय' और 'समाज कल्याण' के लिए सरकार द्वारा 'भूमि सुधार' और 'विकास परियोजनाओं' को लागू करने में आसानी हो। पहले मौलिक अधिकार होने से सरकार को ऐसा करने में बहुत बाधाएँ आती थीं, क्योंकि लोग अपनी संपत्ति के अधिकार का हवाला देकर अदालतों में चले जाते थे।

उत्तर – संपत्ति का अधिकार अब मौलिक अधिकार न होकर एक कानूनी अधिकार है, जिससे सरकार को सामाजिक और आर्थिक सुधार लागू करने में अधिक लचीलापन मिला है।

बोर्ड परीक्षा के लिए खास

- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मौलिक अधिकारों की 'nature and difference from other rights' – प्रकृति और अन्य अधिकारों से उनके अंतर पर सीधा प्रश्न आ सकता है।
- समता के अधिकार पर अक्सर सीधा सवाल आता है, इसलिए इसके सारे छह पहलुओं को याद रखना और 'अनुच्छेद 16(4) का आरक्षण' वाला अपवाद भी अच्छे से समझना।
- यह अधिकार खासकर अनुच्छेद 23 और 24 के साथ पूछा जाता है। बंधुआ मजदूरी और बाल श्रम के अंतर को स्पष्ट रूप से समझें और उदाहरणों के साथ उत्तर दें।
- धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार और धर्मनिरपेक्षता के बीच का संबंध बहुत महत्वपूर्ण है; इसे अच्छे से समझो और उदाहरणों के साथ लिखने का अभ्यास करो।
- यह प्रश्न बोर्ड परीक्षाओं में 'भारत के मौलिक अधिकार' या 'अल्पसंख्यक वर्गों के हितों का संरक्षण' जैसे टॉपिक्स के तहत आ सकता है। अनुच्छेद 29 और 30 को याद रखना महत्वपूर्ण है।
- डॉ. अंबेडकर द्वारा 'संविधान का हृदय और आत्मा' वाले कथन को उद्धृत करना अक्सर इस अधिकार से जुड़े निबंध-प्रकार के प्रश्नों में महत्वपूर्ण अंक दिलाता है। विभिन्न प्रकार के रिट के नाम और उनके कार्य भी याद रखें।
- राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के 'गठन का वर्ष (1993)' और इसके 'प्रमुख कार्यों' को अच्छे से याद कर लेना, यह बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है।
- यह सवाल अक्सर पूछा जाता है कि मौलिक अधिकारों और नीति-निर्देशक तत्वों में क्या अंतर है। 'वाद योग्य' और 'वाद योग्य नहीं' का अंतर स्पष्ट रूप से लिखना बहुत जरूरी है।
- मौलिक कर्तव्य किस संशोधन द्वारा जोड़े गए और उनकी संख्या कितनी है, यह अक्सर एक नंबर के प्रश्न में पूछा जाता है।
- यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। 'संपत्ति का अधिकार' और 'केशवानंद भारती मामला' पर प्रश्न अक्सर आते हैं। इनके बीच के 'संबंधों' और 'अंतर' को अच्छे से समझना।
- यह प्रश्न बोर्ड परीक्षाओं में 'मौलिक अधिकारों और नीति-निर्देशक तत्वों के बीच संबंध' या 'संविधान संशोधनों के महत्व' पर आधारित प्रश्नों में अक्सर पूछा जाता है। इसे 'केशवानंद भारती' मामले से जोड़कर समझने का प्रयास करें।

एक नज़र में रिवीज़न

- › संविधान के भाग III में, न्यायपालिका द्वारा संरक्षित, सरकार भी उल्लंघन नहीं कर सकती।
- › कानून के समक्ष समानता; भेदभाव निषेध; छुआछूत, उपाधियों का अंत।

- › मानव दुर्व्यापार, बंधुआ मजदूरी, बाल श्रम (14 वर्ष से कम) पर रोक।
- › धर्म चुनने, मानने, प्रचार की स्वतंत्रता; लोक व्यवस्था पर प्रतिबंध; भारत धर्मनिरपेक्ष।
- › अल्पसंख्यकों को भाषा, संस्कृति संरक्षण और शैक्षिक संस्थाएँ स्थापित करने का अधिकार।
- › मौलिक अधिकारों के उल्लंघन पर सीधे अदालत जाने का अधिकार (अनुच्छेद 32).
- › NHRC और अन्य आयोग: मौलिक अधिकारों की रक्षा और उनके उल्लंघन की जांच करते हैं।
- › नैतिक प्रेरणा, कल्याणकारी राज्य के लक्ष्य, 'वाद योग्य नहीं' - न्यायालय में लागू नहीं।
- › नागरिकों की देश के प्रति नैतिक जिम्मेदारियाँ, 42वें संशोधन (1976) से जुड़ीं।
- › मौलिक अधिकार व्यक्तिगत सुरक्षा, नीति-निर्देशक तत्व सामाजिक कल्याण; संपत्ति अधिकार विवाद, 44वां संशोधन।
- › संपत्ति का अधिकार: 44वें संशोधन, 1978 द्वारा मौलिक से कानूनी अधिकार (अनुच्छेद 300A) बना।